सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 10 ● अंक: 169 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार, 24 जुलाई, 2024
मूल्य ₹ 3/-

यदि आपकी कोई विशेष निष्ठा या धर्म है, तो अच्छा है। लेकिन आप उसके बिना भी जी सकते हैं।

-दलाई लामा

शैफाली के तूफान में उड़ी नेपाल... 7 | भाजपा का संघ से दूरियां खत्म... 3 | केशव और संजय निषाद की मुलाकात... 2

किसानों से मिलकर राहुल गांधी ने जानीं उनकी समस्याएं

राहुल बोले- वो किसान इसीलिए उन्हें आने से रोका

अन्नदाताओं को सदन में आने से रोकने पर भड़के कांग्रेस सांसद

- लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष से मिला किसानों का प्रतिनिधिमंडल
- किसानों ने राहुल से की निजी सदस्य विधेयक लाने की बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से आज किसान नेताओं का एक प्रतिनिधि मंडल मिला। जिसने राहुल को अपनी समस्याएं बताईं। हालांकि, सदन के बाहर उस समय हंगामा मच गया जब इन किसानों को सदन के अंदर नहीं आने दिया गया।

दरअसल, लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने किसान नेताओं को संसद में अपने कार्यालय में मिलने के लिए बुलाया था। मगर बवाल तब हो गया, जब किसानों को संसद के अंदर नहीं आने दिया। हालांकि, हंगामे और विरोध के बाद किसान नेताओं के 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने लोकसभा ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की।

अन्य कांग्रेस नेता भी रहे मौजूद

किसान मजदूर मोर्चा और संयुक्त किसान मोर्चा (गैर राजनीतिक) के तत्वावधान में देशभर से आए 12 किसान नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने राहुल गांधी से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल, अमरिंदर सिंह राजा वारिंग, सुखजिंदर सिंह रंधावा, गुरजीत सिंह औजला, धर्मवीर गांधी, डॉ. अमर सिंह, दीपेंद्र सिंह हुड्डा और जय प्रकाश भी मौजूद रहे।

राहुल ने लगाए थे आरोप

मुलाकात से कुछ देर पहले राहुल ने किसानों को संसद के अंदर नहीं आने देने का आरोप लगाया था। राहुल ने पत्रकारों से कहा कि हमने किसान नेताओं को यहां मिलने के लिए आमंत्रित किया था। लेकिन वे उन्हें यहां नहीं आने दे रहे हैं। क्योंकि वे किसान हैं, शायद यही कारण है कि वे उन्हें अंदर नहीं आने दे रहे हैं। राहुल ने आगे कहा कि यह समस्या है। मगर हमें क्या करना चाहिए? यह एक तकनीकी मुद्दा भी हो सकता है। हालांकि, कुछ देर बाद किसानों को अंदर जाने की इजाजत मिल गई। एजेंसी के मुताबिक, किसानों के प्रतिनिधिमंडल ने राहुल गांधी के सामने प्राइवेट मेंबर्स बिल (निजी सदस्य विधेयक) लाने की बात रखी है।

22 जुलाई को देशभर में मोदी सरकार का पुतला जलाएंगे किसान

22 जुलाई को संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा ने कहा था कि वे देशभर में मोदी सरकार के पुतले जलाएंगे। एमएसपी गारंटी को कानूनी बनाने की अपनी कानून की गारंटी, ऋण माफी, फसल बीमा, किसानों और खेतिहर मजदूरों की पेंशन, बिजली के निजीकरण को वापस लेने समेत अन्य मांगों को पूरा करने के लिए नए सिरे से विरोध प्रदर्शन शुरू करेंगे। इसके अलावा विपक्ष द्वारा निजी विधेयकों का समर्थन करने के लिए मार्च भी निकालेंगे। प्रदर्शनकारी किसान 15 अगस्त को देश भर में ट्रैक्टर रैली निकालेंगे। और नए क्रिमिनल बिल की कॉपियां भी जलाएंगे।

विपक्ष का संसद में हल्लाबोल, केंद्र को जमकर घेरा

- अखिलेश बोले- अगर पैकेज से ही सरकार बननी है तो पैकेज इंडिया भी तैयार रखे
- बजट पर चर्चा के दौरान संसद के दोनों सदनों में विपक्ष ने काटा गदर
- राज्यसभा में विपक्ष ने किया सदन से वॉक आउट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद के मानसून्न का आज तीसरा दिन है। इस तीसरे दिन की शुरूआत ही हंगामेदार हुई। मंगलवार को वित्त मंत्री द्वारा पेश किए गए केंद्रीय बजट पर आज सदन में चर्चा हो रही है, लेकिन विपक्ष बजट को लेकर आक्रामक रुख अपनाए हुए है। यही वजह रही कि विपक्षी सांसदों ने संसद के दोनों सदनों में बजट पर जमकर हंगामा किया और सरकार को घेरा।

इस दौरान राज्यसभा में विपक्ष ने सदन से वॉक आउट कर दिया। वहीं दूसरी ओर कांग्रेस सांसद व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से किसानों का प्रतिनिधिमंडल मिला। हालांकि, इसे लेकर भी राहुल ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि किसानों को लोकसभा में नहीं आने दिया गया। उन्हें रोकने का प्रयास किया गया। वहीं बजट पर विपक्ष ने संसद परिसर से लेकर सदन के अंदर तक हंगामा किया और अपना विरोध दर्ज कराया।

दिल्ली अब लखनऊ की ओर नहीं देख रहा : अखिलेश

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने केंद्र को घेरते हुए कहा कि समर्थन मूल्य किसान को न देकर गठबंधन के साथियों को दे रहे हैं। उत्तर प्रदेश को बड़े सपने दिखाए थे, क्या मिला उत्तर प्रदेश को? डबल इंजन की सरकार है तो डबल लाभ मिलना चाहिए था। दिल्ली का लाभ, लखनऊ का लाभ लेकिन लगता है कि दिल्ली अब लखनऊ की ओर नहीं देख रही है या लखनऊ वालों ने दिल्ली वालों को नाराज कर दिया और इसका परिणाम बजट में दिखाई दे रहा है। विकास बिहार जा रहा है तो उत्तर प्रदेश को क्यों छोड़ रहे हैं? बाढ़ अगर बिहार की रोकनी है तो नेपाल और उत्तर प्रदेश की बाढ़ रोके बिना आप बिहार की बाढ़ कैसे रोकेंगे? आप पहले उत्तर प्रदेश और नेपाल की बाढ़ रोके तो बिहार की बाढ़ अपने आप रुक जाएगी। सपा प्रमुख ने कहा कि अगर पैकेज से ही सरकार बननी है तो पैकेज इंडिया गठबंधन वाले भी तैयार रखे हैं।

राज्यों के बीच भेदभाव कर रहा केंद्र : प्रियंका

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि केंद्र सरकार राज्यों के बीच भेदभाव कर रही है, जो कि संघीय ढांचे के भी खिलाफ है। इंडिया गठबंधन हर अन्याय के खिलाफ संघर्ष करेगा और लोगों की आवाज उठाता रहेगा।

विपक्ष का विरोध प्रदर्शन

विपक्ष ने बजट को भेदभावपूर्ण बताया है और संसद भवन परिसर में बजट के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी और अखिलेश यादव समेत इंडी ब्लॉक के सांसदों ने बजट में विपक्ष शासित राज्यों के साथ कथित भेदभाव को लेकर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया।

केशव और संजय निषाद की मुलाकात से गरमाई सियासत

दिल्ली में नड्डा से मीटिंग के बाद एक्टिव मोड में आए डिप्टी सीएम

» इससे पहले ओपी राजभर से भी मौर्य ने की थी मुलाकात

» सपा नेता का दावा- भाजपा छोड़ने वाले हैं केशव प्रसाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी में मचे घमासान की खबरें आए दिन हवा पकड़ती जा रही हैं। क्योंकि बीजेपी के सहयोगी दलों के नेता लगातार डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के आगे हाजिरी लगा रहे हैं और मौर्य भी उनसे मुलाकात कर रहे हैं। सुभासपा प्रमुख ओपी राजभर के बाद अब कैबिनेट मंत्री संजय निषाद और दारा सिंह चौहान की तस्वीरें भी सामने आई हैं, जिन्होंने केशव प्रसाद मौर्य से मुलाकात की है। वहीं पार्टी के कई अन्य नेताओं का भी मौर्य से मुलाकात का सिलसिला जारी है। जिन्होंने प्रदेश की सियासत में नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है।

केशव प्रसाद मौर्य की इन मुलाकातों को महज औपचारिक नहीं माना जा सकता है बल्कि इसे सरकार और संगठन के बीच शक्ति प्रदर्शन के तौर भी देखा जा रहा है। जिसने प्रदेश का सियासी पारा हाई कर दिया है। वहीं प्रदेश में कुछ बड़ा होने की आहट भी तेज हो गई है।

सपा नेता ने कसा तंज

केशव प्रसाद मौर्य के सुपर एक्टिव होने के बाद और लगातार कई नेताओं से मुलाकात के बाद अब तरह-तरह की चर्चाएं तेज हैं। वहीं इसको लेकर समाजवादी पार्टी भी लगातार बीजेपी पर तंज कस रही है। इस बीच सपा नेता आईपी सिंह ने केशव मौर्य की संजय निषाद से मुलाकात को लेकर बीजेपी पर तंज कसते हुए कहा कि केशव प्रसाद मौर्य अब सीएम योगी आदित्यनाथ से टक्कर लेने के लिए तैयार हो गए हैं। उन्होंने केशव प्रसाद मौर्य का स्वागत करते हुए कहा कि देखते हैं कि वो बीजेपी छोड़ते या सीएम योगी हटाए जाते हैं। सपा नेता ने सोशल मीडिया पर लिखा- केशव प्रसाद मौर्य ने बीजेपी छोड़ने का फैसला अंत में कर ही लिया है इसलिए आखिरी दौर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से दो दो हाथ करने के लिए उतर चुके हैं। देखना सबसे अहम होगा कि विधानसभा सत्र के बाद भाजपा छोड़ते हैं या योगी आदित्यनाथ जी हटाये जाते हैं। स्वागत है केशव जी।

मौर्य ने ओबीसी मोर्चा की बैठक भी बुलाई

वहीं डिप्टी सीएम ने बीजेपी ओबीसी मोर्चा की भी बैठक बुलाई गई, जिसमें आगामी कार्यसमिति की बैठक को लेकर चर्चा की गई। दिल्ली में जेपी नड्डा से मुलाक़ात के बाद केशव मौर्य जिस तरह से एक्टिव मोड में नजर आ रहे हैं उसे हल्के में नहीं लिया जा सकता है। एक बात तो तय है कि बीजेपी के कुछ बड़ा हो सकता है। इन मुलाकातों के दौर ने नई बहस छेड़ दी है।

कई नेताओं-मंत्रियों से मुलाकात के बाद सियासत तेज

ओपी राजभर से मिलने के अगले ही दिन निषाद पार्टी के मुखिया और मंत्री संजय निषाद भी केशव प्रसाद मौर्य से मिलने गए। हालांकि, मौर्य ने इसे शिष्टाचार भेंट ही बताया। लेकिन जिस तरह से संजय निषाद ने बुलडोजर को लेकर खुलकर बयान दिया था उसके बाद ये सब इतना भी सामान्य नहीं है। सिर्फ संजय निषाद ही नहीं मंत्री दारा सिंह चौहान भी केशव मौर्य के कैंप कार्यालय पहुंचे और उनसे बात की। केशव प्रसाद मौर्य के सात कालीदास मार्ग स्थित कैंप कार्यालय में एक के बाद एक कई बड़े नेताओं के आने का सिलसिला जारी रहा। जिनकी तस्वीरें भी सामने आई हैं। इनमें संजय निषाद और दारा सिंह चौहान के अलावा विधायक उमेश द्विवेदी, गौरी शंकर वर्मा, भगवान सिंह कुशवाहा, ममतेश शाक्य, आशुतोष मौर्य, सुरेंद्र चौधरी, पूर्व सांसद राजेश वर्मा, पूर्व राज्यसभा सांसद जुगल किशोर समेत कई नेता शामिल रहे।

विशेष राज्य के दर्जे की मांग से नहीं हटेंगे पीछे: तेजस्वी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» बोले- बजट ने बिहार के लोगों को किया निराश

पटना। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए केंद्रीय बजट में बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया गया, लेकिन बिहार को हजारों करोड़ रुपये का स्पेशल पैकेज दिया गया है। इसको लेकर बिहार में आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति तेज हो गई। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इस बजट से बिहार को निराशा मिली है। इसके साथ ही पलायन, उद्योग धंधा और पिछड़ापन सहित कई मुद्दों को लेकर उन्होंने साफ संकेत दिया कि हम विशेष राज्य के दर्जे की मांग से इंच भर भी पीछे नहीं हटेंगे।

तेजस्वी यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा कि आज के बजट ने बिहार के लोगों को फिर निराश किया है। बिहार को प्रगति पथ पर ले जाने के लिए एक रिवाइवल प्लान की जरूरत थी और जिसके लिए विशेष राज्य के दर्जे के साथ विशेष पैकेज की सख्त जरूरत है। रूटीन आवंटन तथा पूर्व स्वीकृत, निर्धारित व आवंटित योजनाओं को नई सौगात बताने वाले बिहार का अपमान ना करें। पलायन रोकने, प्रदेश का पिछड़ापन हटाने तथा उद्योग धंधों के साथ साथ युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए हम विशेष राज्य के दर्जे की मांग से इंच भर भी पीछे नहीं हटेंगे।

कॉरपोरेट घरानों के लिए बनाया गया बजट

आरजेडी विधायक भाई वीरेंद्र ने कहा कि पेश किये गए बजट में बिहार को कुछ लाभ नहीं मिला है। किसानों, मजदूरों के लिए कोई बड़ा ऐलान नहीं किया गया है। केवल और केवल कॉरपोरेट घरानों को ध्यान में रखते हुए बजट बनाया गया है।

ढाई साल बाद देश के गृह मंत्री बनेंगे योगी आदित्यनाथ: टिकैत

» किसान नेता ने कहा- यूपी भाजपा में कोई कहीं नहीं जाएगा, बीजेपी करती है नेताओं की भ्रूण हत्या

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भाजपा में मची खलबली के बीच ऐसे कयास लगाए जा रहे हैं कि सीएम योगी आदित्यनाथ की कुर्सी खतरे में है। इसको लेकर राजनीतिक दल भी अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं।

अब किसान नेता राकेश टिकैत ने यूपी की सियासत और सीएम योगी के भविष्य को लेकर नई भविष्यवाणी कर दी है। इसने सभी को चौंका कर रख दिया है। राकेश

टिकैत ने कहा कि बीजेपी का चक्रव्यू है। इसमें जो फंस जाएगा, वो निकल नहीं पाएगा। इनमें से कोई कहीं नहीं जाएगा। ये आपस में बयान देकर ये देखते हैं कि कौन किसके साथ है? जो निकलता दिखाई देता है, उसे ये मारते (राजनीति खत्म करना) हैं। नेताओं की ये भ्रूण हत्या करते हैं। 2.5 साल बाद योगी जाएंगे दिल्ली। अभी तो टाइम है। इतना ही नहीं राकेश टिकैत ने दावा किया कि 2.5 साल बाद योगी आदित्यनाथ केंद्र सरकार में जाएंगे और गृह मंत्री बनेंगे।

अन्य राज्यों ने क्या केंद्र की भैंसें चुराई हैं: सामना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए केंद्रीय बजट पर विपक्ष लगातार हमलावर है और अपने-अपने तरीके से निशाना साध रहा है। इसी क्रम में अब शिवसेना (यूबीटी) ने भी मुखपत्र सामना के जरिए केंद्र पर निशाना साधा है।

सामना में शिवसेना ने इसे सत्ता को बचाए रखने वाला बजट बताया। इतना ही नहीं शिवसेना ने कहा कि डगमगाती कुर्सी को बचाने के लिए मोदी सरकार को मशक्कत करनी पड़ रही है। कुर्सी के दो पाए बने दो राज्यों बिहार और आंध्र प्रदेश को बजट में से बड़ी खैरात बांटी गई। शिवसेना ने पूछा कि क्या अन्य राज्यों ने केंद्र की भैंसें चुराई हैं?

सामना में लिखा गया कि जिस तरह सपने देखने में पैसे नहीं लगते, उसी तरह

बजट में आंध्र-बिहार को सौगात देने पर शिवसेना का तंज

जनता ने छीन लिया मोदी सरकार का गुरूर

शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे)

शिवसेना ने कहा कि हकीकत में यह बजट केवल प्रधानमंत्री मोदी की कुर्सी बचाने के लिए पेश किया गया है। जिस तरह से केंद्र सरकार के खजाने से आंध्र और बिहार दोनों राज्यों पर बरसात की गई है, उसे देखते हुए इस बजट से साफ नजर आता है कि प्रधानमंत्री मोदी की गद्दी स्थिर बनाए रखने के लिए सरकार को कितनी मशक्कत करनी पड़ रही है। सामना में लिखा गया, डेढ़ महीने पहले आए लोकसभा चुनाव के नतीजों में जनता ने 'मोदी सरकार' का गुरूर छीन लिया और चंद्रबाबू नायडू, नीतीश कुमार की बैसाखियों पर दिल्ली में एनडीए सरकार आ गई। भले ही नरेंद्र मोदी जैसे-तैसे तीसरी बार सत्ता में आ गए हों, लेकिन उनकी कुर्सी डगमगाती हुई नजर आ रही है। इसीलिए कुर्सी के दो पाए बने दो राज्यों बिहार और आंध्र प्रदेश को बजट में से बड़ी खैरात बांटी गई। बाकी राज्यों की जनता पूछ रही है कि क्या यह पूरे देश का बजट है या सरकार को समर्थन देने वाली दो पार्टियों को खुश करने का संकल्प है।

सपने दिखाने में भी पैसे नहीं लगते। इसलिए मोदी शासन का एक ही मूल मंत्र है कि देशवासियों को सिर्फ सपनों में गाफिल कर सत्ता का रथ हांकना 2014 से 2024 तक मोदी सरकार ने हर बजट में जनता को ऐसे ही सपनों में डुबोए रखा।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

लालू यादव को मिली अस्पताल से छुट्टी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव की 23 जुलाई की रात अचानक से तबियत बिगड़ गयी थी और उन्हें एम्स में भर्ती करवाना पड़ा। ताजा जानकारी के अनुसार लालू यादव की तबियत में अब सुधार है और उन्हें अस्पताल से छुट्टी भी दे दी गयी है। फिलहाल वह डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही अभी अपना ख्याल रखेंगे।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव को दिल्ली एम्स से छुट्टी मिल गई है। मंगलवार को अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इलाज के बाद हालत में सुधार होने पर उन्हें छुट्टी दे दी गई। लालू यादव की हालत फिलहाल स्थिर है और बताया जा रहा है कि वह ठीक हैं। राजद सुप्रीमो चारा घोटाले के कई मामलों में दोषी ठहराए गए हैं, जो उस समय से संबंधित हैं जब वह अविभाजित बिहार के मुख्यमंत्री थे। फिलहाल वह जमानत पर हैं।

भाजपा का संघ से दूरियां खत्म करने का प्रयास!

मोदी सरकार ने 58 साल पुराना बैन हटाने का दिया आदेश

» अब सरकारी कर्मचारी आरएसएस की गतिविधियों में ले सकेंगे भाग

» लोकसभा नतीजों के बाद बीजेपी पर हमलावर है संघ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के नतीजे सामने आने के बाद से भाजपा के अंदर आंतरिक कलह जारी है। वहीं दूसरी ओर संघ भी लगातार बीजेपी पर हमलावर बनी हुई है। संघ और बीजेपी के बीच पिछले कुछ वक्त से ही लगातार दूरियां बढ़ती देखी जा रही हैं। लोग तो लोकसभा चुनाव में बीजेपी के 240 पर ही सिमट जाने के पीछे भी संघ की नाराजगी को ही एक बड़ी वजह बताते हैं। काफी हद तक ऐसा है भी, क्योंकि इस बार के चुनाव में संघ उतना सक्रिय नहीं दिखा, जितना अक्सर चुनावों में होता है। वहीं चुनाव के दौरान बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का ये बयान देना कि अब बीजेपी को संघ के पीछे चलने की जरूरत नहीं है। ये कुछ एक ऐसे कारण रहे जिन्होंने संघ और भाजपा के बीच दूरियां बढ़ाने का काम किया। यही कारण रहा कि संघ भाजपा के लिए उस तरह से आगे नहीं आया और इसका नतीजा ये रहा कि भाजपा 400 के सपने से तो दूर रही ही, लेकिन पूर्ण बहुमत के 272 के आंकड़े तक भी नहीं पहुंच पाई और सिर्फ 240 पर ही सिमटकर रह गई।

लोकसभा नतीजों के बाद से संघ की ओर से आए दिन भाजपा व पीएम मोदी पर इशारों-इशारों में तंज कसा जाता रहा है। चाहें संघ प्रमुख मोहन भागवत हों या फिर आरएसएस का कोई अन्य पदाधिकारी, नतीजों के सामने आने के बाद भाजपा पर इशारों-इशारों में तंज कसने का कोई मौका नड्डी छोड़ रहे हैं। सबसे बड़ी बात की अब संघ के ये हमले सरेआम सार्वजनिक मंचों से हो रहे हैं। ऐसे में आए दिन संघ और मोदी व बीजेपी के बीच तल्खियां और दूरियां बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में अब मोदी सरकार ने एक ऐसा आदेश जारी किया है, जो आरएसएस की ओर भाजपा व मोदी की तरफ से फिर से सबकुछ सामान्य करने का प्रयास नजर आता है। इस आदेश के जरिए मोदी सरकार ने एक 58 साल पुराना प्रतिबंध भी खत्म कर दिया। ऐसे में अब इस आदेश के बाद ऐसा लगता है कि भाजपा व पीएम मोदी को ये एहसास हो गया कि आरएसएस की नाराजगी उन्हें आने वाले दिनों में और भी मंहगी पड़ सकती है। इसीलिए सरकार का ये आदेश भाजपा के एक बार फिर संघ के आगे नतमस्तक होने का संदेश देता है।

दरअसल, केंद्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के आरएसएस की गतिविधियों में भाग लेने पर लगा प्रतिबंध हटा दिया है। इसे सरकार द्वारा आरएसएस और बीजेपी के बीच के संबंध सुधारने की दिशा में एक कदम माना जा रहा है। इस आदेश के बाद अब संघ की ओर से भी भाजपा को आश्वासन दिया गया है। सूत्रों का कहना है कि भाजपा को आश्वासन दिया गया है कि संघ के नेता सार्वजनिक रूप से उसकी या उसके नेतृत्व की आलोचना नहीं करेंगे। यहां बता दें कि भाजपा नेतृत्व ने आरएसएस नेताओं की हाल ही में पार्टी और सरकार की सार्वजनिक आलोचना पर आपत्ति जताई थी, जबकि संघ के नेता लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा की इस टिप्पणी से नाखुश थे कि पार्टी आरएसएस की बैसाखी के बिना, खुद को चलाने में सक्षम है। लेकिन इस आदेश के बाद अब ऐसा लगता है कि भाजपा और संघ के बीच की दूरियों को कम करने का प्रयास किया जा रहा है।

भागवत ने इशारों-इशारों में मोदी को बनाया निशाना

लोकसभा चुनाव नतीजों के बाद से मोहन भागवत लगातार भाजपा और पीएम मोदी पर हमलावर देखे गए हैं। वो इशारों-इशारों में तंज कसने का कोई मौका छोड़ते नहीं दिखे। चुनाव के नतीजे आने के कुछ ही दिन बाद संघ प्रमुख ने कहा था कि एक सच्चे सेवक में अहंकार नहीं होता और वह गरिमा बनाए रखते हुए लोगों की सेवा करता है। उन्होंने यह भी कहा था कि इस चुनाव में दोनों तरफ से मर्यादा तोड़ी गई। हाल ही में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि आत्म-विकास के क्रम में एक मनुष्य 'सुपरमैन', फिर 'देवता' और 'भगवान' बनना चाहता है और 'विश्वरूप' की आकांक्षा कर सकता है, लेकिन यह निश्चित नहीं है कि आगे क्या होगा। उनके इस बयान को पीएम मोदी से जोड़कर देखा गया।

आदेश के बाद छिड़ा राजनीतिक विवाद

लेकिन अब जब मोदी सरकार ने तकरीबन 58 साल बाद ये प्रतिबंध हटा दिया है, तो इस बैन को अचानक हटाने पर राजनीतिक विवाद भी छिड़ गया है। वहीं संघ के सूत्रों ने इस पर आरएसएस की ओर से किसी भी मांग से इनकार किया है। आरएसएस नेताओं ने कहा कि हाल के वर्षों में किसी भी बैठक में यह मुद्दा नहीं उठा है। दरअसल, इस लोकसभा चुनाव में आरएसएस ने भाजपा की वैसी मदद नहीं की थी जैसा वह पहले करता आया था। जिसके बाद से यह संदेह जताया जा रहा है कि बीजेपी और आरएसएस के संबंधों में खटास आ गयी है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के कुछ बयानों और आरएसएस से जुड़ी पत्रिकाओं में छपी बातों ने इन अफवाहों को और हवा दे दी।

भाजपा सरकार ने भी नहीं हटाया था प्रतिबंध

उसके बाद कई अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों के हाथों में सत्ता जाने के बावजूद इसमें कोई बदलाव नहीं आया। यहां तक कि अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली पहली भाजपा सरकार ने भी यह बैन नहीं हटाया। 27 नवंबर 2014 को सत्ता में आने के छह महीने बाद नरेंद्र मोदी सरकार ने कुछ खंड जोड़ने के लिए कंडक्ट रूल में संशोधन किया, जिनमें से एक में कहा गया था कि प्रत्येक सरकारी कर्मचारी हर समय राजनीतिक तटस्थता बनाए रखेगा। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत को इस दौरान सवालों का सामना करना पड़ा कि क्या वह संघ की गतिविधियों में शामिल होने वाले सरकारी कर्मचारियों पर प्रतिबंध हटाने की मांग करने जा रहे हैं। जिस पर 1 दिसंबर 2014 को हरिद्वार में एक बैठक में भागवत ने कहा था कि हम सरकार से कोई मांग नहीं करने जा रहे। हम अपना काम कर रहे हैं। हमारा काम ऐसे किसी अवरोध से नहीं रुकता।

सरकार का फैसला लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करता है : संघ

कुछ एक ऐसी भी खबरें आ रही हैं कि बैन हटाने से संघ के भीतर संदेश गया है कि यह मोदी सरकार और भाजपा की तरफ से संकेत है कि भाजपा और आरएसएस के बीच लोकसभा चुनाव के दौरान सामने आई दूरियों को कम किया जाना चाहिए। आरएसएस के एक वरिष्ठ पदाधिकारी के हवाले से बताया गया कि चुनावों से पहले संघ और भाजपा के बीच संवाद टूट गया था लेकिन संघ के एक वरिष्ठ सदस्य ने मध्यस्थता की, जो पहले भी दोनों के बीच समन्वय करा चुके हैं। आरएसएस की कार्यकारी समिति ने स्थिति में सुधार किया है। सरकार के इस कदम की आरएसएस ने सराहना की है। आरएसएस के प्रवक्ता सुनील आंबेकर ने कहा कि सरकार का यह फैसला सही है और भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करता है। संगठन का देश और समाज की सेवा में 99 सालों का इतिहास है। आंबेकर ने आगे कहा कि अपने राजनीतिक हितों के कारण, तत्कालीन सरकार ने सरकारी कर्मचारियों को संघ जैसे रचनात्मक संगठन की गतिविधियों में भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया था।

बीजेपी को आरएसएस का हाथ पकड़कर चलने की जरूरत नहीं : नड्डा

लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा था कि अब भाजपा उस स्थिति में नहीं रह गई है कि वह आरएसएस का हाथ पकड़ कर चले। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने चुनाव प्रचार के दौरान कहा था कि शुरू में हम थोड़ा कम थे, हमें संघ की जरूरत पड़ती थी, आज हम बढ़ गए हैं, सक्षम हैं तो भाजपा अपने आप को चलाती है।

1966 में लगा था प्रतिबंध

बता दें कि ये एक पुराना प्रतिबंध है। दरअसल, 1964 में केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियम और अखिल भारतीय सेवा आचरण नियम में कहा गया था कि कोई भी सरकारी कर्मचारी किसी भी राजनीतिक दल या राजनीति में भाग लेने वाले किसी भी संगठन का सदस्य नहीं होगा या उससे जुड़ा नहीं होगा। जिसके बाद साल 1966 में गृह मंत्रालय के एक सर्कुलर में कहा गया था कि सरकारी कर्मचारियों द्वारा आरएसएस और जमात-ए-इस्लामी की गतिविधियों में भागीदारी या सदस्यता के संबंध में कंडक्ट रूल 5 के सब-रूल (1) के प्रावधान लागू होंगे। ऐसे अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। यानी ये प्रतिबंध तकरीबन 58 साल पुराना है। जिसे अब मोदी सरकार ने लोकसभा नतीजों में मिली निराशा के बाद खत्म किया है। इसके अलावा, सिविल सेवाओं और सरकारी पदों पर नियुक्ति के नियमों की ब्रोशर में सांप्रदायिक संगठनों की गतिविधियों में भाग लेने के खिलाफ चेतावनी दी गई है, जिसमें कहा गया है कि जो लोग ऐसा करते हैं उन्हें सरकारी नौकरी से हटाया जा सकता है।

संघ ने चुनाव नतीजों को बीजेपी के लिए बताया था आईना

आरएसएस के एक नेता रतन शारदा ने भी कहा था कि बीजेपी के सांसद तक जनता के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। शारदा ने कहा था कि आरएसएस के कैडर को अहमियत नहीं दी गई और इसे हल्के में लिया गया। एक न्यूज चैनल को दिये गए इंटरव्यू में उन्होंने कहा था कि मध्य प्रदेश में संघ से जुड़े एक व्यक्ति ने उनसे कहा कि उनकी बात नहीं सुनी जाती है। भाजपा अपनी पसंद के उम्मीदवारों को चुनाव मैदान में उतारती है क्योंकि बीजेपी को लगता है कि झक मार के जिता ही देंगे। आरएसएस इस तरह के बर्ताव को पसंद नहीं करता है। आरएसएस से संबंधित पत्रिका ऑर्गनाइजर में प्रकाशित एक लेख में लोकसभा चुनाव परिणामों को अति आत्मविश्वासी भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं को आईना दिखाने जैसा बताया गया था। आर्टिकल में कहा गया था कि नेता सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करने में व्यस्त थे और जमीन पर नहीं उतरे। भाजपा नेता अपनी दुनिया में खुश थे और जमीन से उठ रही आवाजें नहीं सुन रहे थे।

1996 में फिर से दोहराया गया था प्रतिबंध का आदेश

इसके बाद जुलाई 1970 में, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सरकारी कर्मचारियों की राजनीतिक गतिविधियों पर प्रतिबंध दोहराया था। 1975-77 के आपातकाल के दौरान, आनंद मार्ग और सीपीआई (एमएल) मुक्ति के अलावा, आरएसएस और जमात-ए-इस्लामी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई के लिए सर्कुलर जारी किए गए थे। इस अवधि के दौरान इनकी गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। अक्टूबर 1980 में, जब इंदिरा गांधी दोबारा प्रधानमंत्री बनीं, सरकार ने 1966 के प्रतिबंधों को दोहराते हुए एक बार फिर सर्कुलर जारी किया और कहा कि देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए सरकारी कर्मचारियों को एक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण किसी भी सांप्रदायिक संगठन को किसी भी तरह का संरक्षण नहीं दिया जाना चाहिए। इस दिशा में किसी भी तरह की अवहेलना को अनुशासनहीनता माना जाना चाहिए।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

मोदी सरकार में किसानों के लिए लाठियां हैं, बजट नहीं...

कहने को तो सरकार ने एक करोड़ युवाओं को टॉप 500 कंपनियों में इंटर्नशिप का मौका और हर महीने 5 हजार रुपए भत्ते के रूप में देने का ऐलान किया, लेकिन क्या केंद्र का ये ऐलान युवाओं के साथ इंसाफ है? क्या ये ऐलान बेरोजगारी की स्थिति में कुछ बदलाव ला सकता है? ये ज्वलंत प्रश्न हैं। वहीं ऐसा माना जाता है कि भाजपा के इस चुनाव में पंजाब, हरियाणा और यूपी में मिली हार की एक प्रमुख वजह किसानों की नाराजगी भी रही।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलावर को केंद्र की नई नवेली खिचड़ी सरकार माने एनडीए के तीसरे कार्यकाल की सरकार का पहला बजट पेश किया। इस बजट से किसानों से लेकर टैक्स पेयर, युवा और बेरोजगार सभी बड़ी उम्मीद लगाए बैठे थे। लेकिन जब बजट आया तो सभी की उम्मीदें धराशायी हो गईं। क्योंकि इस बजट में सरकार ने छुआ तो हर मुद्दे को लेकिन संतुष्टि किसी को नहीं दी। मसलन कहने को तो टैक्स स्लैब में एक बार फिर बदलाव किया गया, लेकिन ये बदलाव टैक्स पेयर्स के लिए ऊंट के मुंह में जीरा के समान ही रहा। क्योंकि इससे बड़े टैक्स पेयर्स को कोई भी लाभ होने की उम्मीद नहीं दिख रही है। कुछ ऐसा ही हाल युवाओं और बेरोजगारों के साथ भी मोदी सरकार ने किया। कहने को तो सरकार ने एक करोड़ युवाओं को टॉप 500 कंपनियों में इंटर्नशिप का मौका और हर महीने 5 हजार रुपए भत्ते के रूप में देने का ऐलान किया, लेकिन क्या केंद्र का ये ऐलान युवाओं के साथ इंसाफ है? क्या ये ऐलान बेरोजगारी की स्थिति में कुछ बदलाव ला सकता है? ये ज्वलंत प्रश्न हैं। वहीं ऐसा माना जाता है कि भाजपा के इस चुनाव में पंजाब, हरियाणा और यूपी में मिली हार की एक प्रमुख वजह किसानों की नाराजगी भी रही। क्योंकि किसानों और मोदी सरकार के बीच लगभग पूरे पांच साल ही लगातार आनबन बनी रही।

किसानों ने बड़े-बड़े आंदोलन भी किए। ऐसे में उम्मीद थी कि अब जब भाजपा को झटका लग चुका है, तब नई सरकार के इस पहले बजट में किसानों का ख्याल रखा जाए और उनके लिए सरकार कुछ तो खास लेकर आएगी। लेकिन जब वित्त मंत्री ने किसानों का जिक्र किया तो देश के अन्नदाताओं को निराशा, नाउम्मीदी और नाइंसाफी के अलावा कुछ नहीं मिला। क्योंकि अपने बजट में वित्त मंत्री ने न तो एमएसपी का कोई जिक्र किया और उस पर किसानों को कोई राहत दी। न ही पीएम किसान सम्मान निधि की राशि में रत्तीभर भी बढ़ोतरी को लेकर कोई ऐलान नहीं किए गए। जिस देश की अभी भी आधे से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर हो और जो कृषि प्रधान देश कहा जाता हो, उस देश के बजट में किसानों और कृषि क्षेत्र के लिए सिर्फ 1.52 लाख करोड़ रुपये का प्रावधान करना, ये दर्शाता है कि देश की सरकार को अन्नदाताओं की कितनी चिंता है। या उनके लिए ये किसान कितने महत्वपूर्ण हैं। ताज्जुब की बात तो ये है कि ये बजट उस समय आया है जब किसानों की ओर से फिर से आंदोलन करने की बात भी कही जा रही है और दिल्ली कूच का ऐलान भी किया जा चुका है। लेकिन फिर भी किसानों की अनदेखी ये दर्शाती है कि प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार किसानों पर सिर्फ लाठी भाजना जानती है, उनकी मदद या उनके लिए योजनाएं लाना नहीं। फिलहाल कुल मिलाकर ये मच अवेटेड बजट में जनता के हाथ सिर्फ इंतजार ही लगा है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करेगी प्राकृतिक खेती

देविंदर शर्मा

इस सप्ताह में दो घटनाक्रम सामने आये जिनके बारे में मुझे लगता है कि हमें मूल्यांकन करने की जरूरत है। यदि हम कड़ी जोड़ सकें, तो एक वाकया उस आपदा का संकेत देता है जिसका इंतजार है, और दूसरा दुनिया जिस बड़े संकट का सामना कर रही है, उससे निपटने के लिए एक स्थायी समाधान प्रदान करता है, जिसके आने वाले वर्षों में और भी बदतर होने की संभावना है। जबकि मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, प्रमुख गेहूं उत्पादक यूरोपीय देश फ्रांस में भारी और लगातार बारिश के कारण फसल को बड़ा नुकसान हुआ है, नीदरलैंड के एक पत्रकार ने मुझे लिखा है कि क्या मौसम में स्पष्ट परिवर्तन किसानों के लिए आर्थिक आपदा बनने जा रहा है। उसकी चिंता हॉलैंड में, जो कुछ वह देखती है, उससे पैदा होती है, जहां बारिश रुकी नहीं है, खेत पानी से लबालब हैं, परिणामस्वरूप खेतों में लगाई आलू की फसल सड़ रही है और सब्जियों के बीज उग नहीं रहे हैं।

इस बीच भारत अभूतपूर्व गर्मी की चपेट में है। जैसे-जैसे सामान्य तापमान बढ़ता जा रहा है, आशंकाएं हैं कि क्या देश आने वाले वर्षों में अपनी खाद्य सुरक्षा जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होगा? कुछ वर्ष पहले गेहूं की कटाई के दौरान गर्मी ने कहर ढहाया था। उसके एक साल बाद, मानसून के मौसम में भी लगभग एक महीने तक बारिश नहीं हुई, धान की खड़ी फसल पर असर पड़ा। यह जानते हुए कि जलवायु परिवर्तन भविष्य में खेल बिगाड़ सकता है, सरकार अति-जागरूक हो रही है, उसने कदम उठाए हैं। इनमें गेहूं और गैर-बासमती निर्यात पर प्रतिबंध लगाना और खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखना यकीनी बनाने के लिए विभिन्न कृषि वस्तुओं पर स्टॉक सीमा भी लागू करना शामिल है। जैसा कि डच पत्रकार कहती हैं कि जलवायु परिवर्तन विश्वव्यापी घटना बनने जा रही है जिसके कृषि पर बेहद बड़े प्रभाव होंगे। जबकि उद्योग इसे अपनी क्लाइमेट स्मार्ट प्रौद्योगिकी बेचने के लिए उपयुक्त अवसर के रूप में देखते हैं, जिसकी वे बीते कई साल से मार्केटिंग कर रहे हैं। बड़ा सवाल यह है कि क्या दुनिया ने जलवायु के असर झेलने में समर्थ कृषि के लिए दृष्टिकोण, नीतियों और रणनीतियों पर विचार किया है।

मानवता के लिए गुलबेंकियन प्रतिष्ठित पुरस्कार इस बार दो अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्राप्तकर्ताओं के साथ ही आंध्र प्रदेश समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती

यानी एपीसीएमएनएफ को प्रदान किया गया है। दरअसल, यह पुरस्कार उन जलवायु कार्यों और जलवायु समाधानों में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है जो उम्मीद और संभावनाओं को प्रेरित करते हैं। पुरस्कार के तहत 1 मिलियन यूरो नकद प्रदान किये जाते हैं। बीते दिनों, रायथु साधिकार संस्था के कार्यकारी उपाध्यक्ष विजय कुमार ने यह पुरस्कार पुर्तगाल के लिस्बन में एक शानदार समारोह में पूर्व जर्मन चांसलर एंजेला मार्केल के हाथों प्राप्त किया। एपीसीएनएफ को दुनिया भर से प्राप्त 181 नामांकनों में से चुना गया था।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि उत्तरी अमेरिका में मैक्सिको से लेकर एशिया में फिलींपींस तक, और अमेरिका के टेक्सास से लेकर भारत में महाराष्ट्र तक- दुनिया के विभिन्न भागों में कृषि कड़े जलवायु प्रभावों से दो-चार है। विगत में भी, कुछ भागों में अतिवृष्टि, बाढ़, भयंकर तूफानों व चक्रवातों की बढ़ती तादाद से कृषि को नुकसान पहुंचता रहा है तो विभिन्न अन्य क्षेत्रों में लंबे समय तक सूखा और भीषण अकाल जैसी स्थितियां रही हैं। कहने की जरूरत नहीं कि जलवायु प्रेरित मौसम के मिजाज का खेती पर संचयी हानिकारक प्रभाव पड़ा है। जबकि किसान जलवायु का प्रकोप सहन करता है, वहीं नीति नियंता इसको नहीं मानते या इन विनाशकारी प्रभावों को कभी-कभार की घटनाओं के रूप में लेते हैं। यह ऐसा लगता है, जैसे दीर्घकाल तक चिंता करने की कोई बात ही नहीं हो। जबकि सतत कृषि के बारे में बातें की जाती रही, कृषि-पारिस्थितिकीय खेती प्रणालियों पर पिछले कुछ सालों में ध्यान गया है। यहां लगता है कि आंध्र प्रदेश में प्रोत्साहित की गयी समुदाय प्रबंधित प्राकृतिक खेती प्रणालियां विश्व में कृषि-पारिस्थितिकी की सबसे बड़ी प्रयोगशाला के रूप में सामने आयी है और परिणामस्वरूप सामने मौजूद बेहद हानिकारक जलवायु संकट का स्थाई समाधान प्रदान करती है। ऐसा भी महसूस होता है कि जलवायु संकट का यह जो कृषि-पारिस्थितिकीय समाधान प्रदान करती है वह उम्मीद और संकल्पों से भरपूर है। यह सही वक्त है कि क्षेत्र-विशेष की अनुकूलताओं को ध्यान में रखकर, आंध्र प्रदेश का यह मॉडल पूरे देश में लागू किया जाये। जैसा कि यह लेखक प्राय: कहते हैं कि जो 8 लाख किसान पूरी तरह से रासायनिक कृषि से प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की ओर रुख कर चुके हैं या करने की प्रक्रिया में हैं, वे कड़ी चुनौतियों से दो-चार होते हैं, जिन्हें प्रति वर्ष आने वाली खरीफ

प्रवासी भारतवंशियों की जटिल दास्तां

ज्योति मल्होत्रा

लगता है ऊषा चिलुकुरी वेंस पर लिख-लिखकर न्यूयॉर्क टाइम्स का दिल नहीं भर रहा। बात चाहे उनकी गैर-डिजाइनर पोशाकों की हो या वो चौरस हील पहनती हैं या फिर उनके बाल काले हैं जिसमें सफेद बालों की लटें साफ दिखाई पड़ती हैं- वास्तव में, पिछले पूरे हफ्ते उनके स्वरूप को लेकर चर्चाएं चलीं जब अमेरिकी रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में उनके पति जेडी वेंस ने डोनल्ड ट्रंप को उपराष्ट्रपति उम्मीदवार बनाए जाने की पेशकश को स्वीकार किया। उत्साह में आकर बहुत पुराने इस अखबार ने तो उन्हें विश्व की भावी दूसरी सबसे ताकतवर महिला तक बता डाला। किंतु वे ट्रंप की पत्नी की तरह नहीं हैं, जो अपना पूरा वक्त 'मर्दों की नजरें पाने' के लिए सजने संवरने में लगाती हैं। व्यावसायिक लिहाज से ऊषा की उपलब्धि कम रोचक नहीं है, वे सान फ्रेंसिस्को की एक वकालत कंपनी 'कूल, वॉक' में कार्यरत हैं। जेडी वेंस से उनकी भेंट येल यूनिवर्सिटी में हुई और आगे चलकर कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में उन्हें गेट्स फेलोशिप मिली।

वर्ष 2014 तक, वे बतौर एक डेमोक्रेट पंजीकृत थीं। वेंस से उनकी शादी को तब सात साल हो चुके थे जब उन्होंने 2021 में 'यूनिवर्सिटीस आर द एनिमी' शीर्षक वाला भाषण दिया था। अमेरिका में इन दिनों मतदाताओं का रुझान काफी बदल रहा है, वे पहले की तरह लाल (रिपब्लिकन पार्टी का रंग) और नीला (डेमोक्रेटिक दल का सूचक) से बंधे नहीं हैं। ट्रंप स्वयं अपनी आवाज तमाम अमेरिका की बताना चाह रहे हैं, न कि केवल आधे रिपब्लिकनों की। खुद वेंस, जो कभी ट्रंप को 'कल्चरल हिरोइन' कहा करते थे, अब उप-राष्ट्रपति पद के लिए ट्रंप की प्राथमिकता बन चुके हैं। और फिर दूसरी ओर कमला हैरिस तो हैं ही। यदि जो बाइडेन ने खुद को राष्ट्रपति पद की दौड़ से अलग किया, जैसा कि इस सप्ताह होने की उम्मीद है, तो क्या बिसराने लायक किंतु महत्वपूर्ण कमला हैरिस उनकी जगह लेंगी या फिर डेमोक्रेट पार्टी नेतृत्व करने के लिए कोई नया नेता ढूंढ़ लेगी।

जो लोग भारत में भारतीय-अमेरिकियों की बढ़ती महत्ता को लेकर खुश हो रहे हैं कि वे ताकत के ठीक केंद्र बिंदु में होंगे- तो तथ्य यह है कि अमेरिका में कमला हैरिस को बतौर एक 'भूरी' नहीं 'काली' की तरह लिया जाता है। ऊषा के मामले में भी, जो आज भी हिंदू और शाकाहारी हैं, इस बात की संभावना बहुत कम है कि अपने पति को भारत के पक्ष में नीतियां बदलने को राजी कर पाएंगी, भले ही एक समय उनके दादा के सगे छोटे भाई आंध्र प्रदेश में आरएसएस इकाई के प्रदेशाध्यक्ष रहे हों। चंडीगढ़ियों की आम बोली में कहें तो ये लोग नारियल की तरह हैं- बाहर से भूरे दिखते हैं, अंदर से हैं सफेद! आपको एक दलीप सिंह याद हैं? दो साल पहले वे अमेरिका के उप-राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार थे- वे उन दलीप सिंह सौंध के भाई के पोते हैं, जो अमेरिका की संसद में पहली बार चुने जाने वाले भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिक थे- उन्होंने मोदी सरकार को दोटूक चेतावनी दी थी कि यदि भारत ने यूक्रेन पर रूसी चढ़ाई के संदर्भ में लगाए अमेरिकी प्रतिबंधों को नहीं माना और रूस से सस्ती दर पर तेल खरीदने की कोशिश की, तो इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा। तब दलीप सिंह के इन बोलों को लेकर भारत वाकई असहज हुआ था। भारतीय अधिकारियों को अमेरिकियों को कहना पड़ा कि यदि उन्हें बेलाग बोलना है, तो बंद कमरे में कहा कहें। इस हिसाब से दलीप सिंह को वाकई उच्च गुणवत्ता वाला नारियल कहा जा सकता है- चेहरे-मोहरे से अपने लोगों जैसा किंतु उनके प्रति संवेदना-शून्य।

बेशक हमें भारतीय मूल के अनिवासियों की उपलब्धि पर खुश होना चाहिए- यह स्वाभाविक भी है। जब 1917 में एशियाटिक बार्ड जोन एक्ट बनाकर अमेरिका में भारतीयों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया था। पिछले कोई 100 सालों में अमेरिका में बाहर से आकर बसने वालों से भारतवंशी सबसे अधिक सफल समुदाय है। जिनकी गिनती लगभग 50 लाख है। एक्स एप्प परञ्चदरैबिटहोल84 नामक हैंडल की एक पोस्ट बताती है कि भारतीय मूल के अमेरिकी परिवार की औसत वार्षिक आय 119,858 डॉलर है, जो कि किसी भी अन्य एशियाई समुदाय में सबसे अधिक है, फिर चाहे यह चीनी, जापानी और पाकिस्तानी क्यों न हों। खुद एलन मस्क ने इस पोस्ट को आगे शेयर किया है। आज अल्फाबेट के सुंदर पिचाई और माइक्रोसॉफ्ट के सत्य नडेला अमेरिका की सबसे बड़ी 10 बड़ी कंपनियों में से दो के सर्वेसर्वा हैं।

भारतीय मूल के अनिवासी समुदाय की कहानी जटिल है। मूल मातृभूमि के प्रति प्यार और चाव 'परदेस' में भी सदा बना रहता है, हालांकि 'देस' में भी उन्होंने अपने समृद्ध पांव अच्छी तरह जमा रखे हैं। इनमें अधिकांश अपनी दोहरी पहचान और भावुकता को आसानी से अदलने-बदलने में सक्षम हैं- करण जौहर की अनेक फिल्में इसकी गवाह हैं। समस्या तब पैदा होती है, जब यहां वाले भारतीय खुद की पहचान विदेशों में बैठे अनिवासी भारतीयों से जोड़ने लगते हैं और कल्पना करते हैं कि 'अपने वह बंदे' अभी भी उन गांव का हिस्सा हैं, जिन्हें वे कब का पीछे छोड़ आए हैं भले ही वह गांव भारत के किसी भी कोने में या किसी काल में उनके पुरखों का घर क्यों न रहा हो। यह ठीक वैसा है जब कोई नासमझ देहाती शहर में आकर कहे कि एक ही गांव से होने के नाते अपने 'जात-भाई' के घर में टिकना उसका नैसर्गिक हक है। तथ्य तो यह है, ऊषा वेंस या कालांतर में कमला हैरिस को लेकर बना दीवानगी भरा लगाव- क्योंकि आदत

स्वयंभूनाथ (मंकी टेम्पल)

यह बौद्ध स्तूप काठमांडू के पश्चिम में एक पहाड़ी पर स्थित है और इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। यह स्थल अपने अद्वितीय वास्तुकला और मनोहारी दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में रहने वाले बंदरों की बड़ी आबादी के कारण इसे अक्सर बंदर मंदिर के रूप में जाना जाता है, जिसकी उत्पत्ति लगभग 5वीं शताब्दी ई.पू. में हुई थी। स्वयंभूनाथ का अर्थ है स्वयं का अस्तित्व, जो इस स्थल की पौराणिक उत्पत्ति और बौद्धों और हिंदुओं दोनों के लिए एक पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में इसके स्थायी महत्व की ओर इशारा करता है।

नेपाल पर्वतारोहियों के लिए है स्वर्ग

अद्भुत हैं देश के ये पांच पर्यटन स्थल

नेपाल, हिमालय की गोद में बसा एक छोटा सा देश, जहां हर कदम पर प्रकृति की बेजोड़ सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। यह देश न केवल पर्वतारोहियों के लिए स्वर्ग है, बल्कि सांस्कृतिक पर्यटकों, वन्यजीव प्रेमियों और आत्मा की शांति की खोज करने वालों के लिए भी अद्वितीय स्थान है। यहां के धार्मिक स्थलों का अनुभव हर यात्री के लिए अविस्मरणीय साबित होता है। नेपाल की राजधानी काठमांडू अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर देखने योग्य स्थानों में स्वयंभूनाथ मंदिर, पशुपतिनाथ मंदिर, दरबार स्क्वायर शामिल है।

पाटन दरबार स्क्वायर

काठमांडू का यह ऐतिहासिक स्थान राजसी महलों, मंदिरों और आंगनों का संग्रह है और इसे नेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। पाटन, जिसे ललितपुर भी कहा जाता है, अपनी सांस्कृतिक धरोहर और कला के लिए प्रसिद्ध है।

पोखरा

पोखरा, नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा शहर, अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यह स्थल पर्वतारोहियों और ट्रेकर्स के लिए एक प्रमुख आधार है। इसके अलावा फेवा झील पोखरा के केंद्र में स्थित है और यहां बोटिंग का आनंद लिया जा सकता है। वहीं देवी फॉल झरना पोखरा का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जो अपनी खूबसूरती और रहस्यमयी गुफा के लिए जाना जाता है।

लुम्बिनी

लुम्बिनी, गौतम बुद्ध की जन्मस्थली, बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक पवित्र स्थल है। यहां का प्रमुख आकर्षण है मायादेवी मंदिर। यह मंदिर गौतम बुद्ध की माता, मायादेवी, को समर्पित है। इसके अलावा गोल्डन मंदिर या बौद्ध मंदिर अपनी अद्वितीय वास्तुकला और सुनहरे रंग के लिए प्रसिद्ध है। वहीं लुम्बिनी गार्डन को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।

पशुपतिनाथ मंदिर

नेपाल में काठमांडू के हृदय में स्थित है विश्वप्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर। यह हिंदुओं का सबसे बड़ा शिव मंदिर है। हालांकि मान्यता प्राप्त बारह ज्योतिर्लिंगों में पशुपतिनाथ का नाम नहीं है फिर भी पशुपतिनाथ को दैदीप्यमान लिंग माना जाता है। बागमती नदी के किनारे स्थित यह मंदिर धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का धरोहर है। माघ और पौष माह में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पशुपतिनाथ को बारह बजे से सुबह चार बजे तक जरी के वस्त्रों और स्वर्ण आभूषणों से सजाया जाता है।

हंसना मना है

आजकल 12 साल के लड़के भी खुद की मोटरसाइकिल चलाते घूम रहे है! और हम थे साइकिल भी 3 चरणों में सीखी थी..! 1) कैंची 2) डंडा 3) गद्दी।

पत्नी -तुम मुझे कितना प्यार करते हो? पति -72 प्रतिशत मेरी जान... पत्नी - 100 प्रतिशत क्यों नहीं करते हो? पति - पगली... लग्जरी चीजों पर 28 फीसदी जीएसटी भी तो लगता है ना...पति की इस बात को सुनकर पत्नी गुस्से से लाल हो गई और घर छोड़कर जाने की धमकी दे दी।

टीचर - नेताजी आपका बेटा फेल हो गया और आप सबको लड्डू खिला रहे हैं... नेताजी - 70 लड़कों की क्लास में 60 फेल हैं, बहुमत तो मेरे बेटे के साथ है...!

ग्राहक- बेटा तेरे पापा की तो रसगुल्ले की दुकान है, तेरा खाने का मन नहीं करता? बच्चा ग्राहक से- बहुत मन करता है अंकल लेकिन क्या करें पापा रसगुल्ले गिन कर रखते हैं इसलिए बस इनको चूस के वापिस रख देता हूं। ग्राहक बेहोश..

कहानी | नामुमकिन को कैसे मुमकिन बनायें

एक राजा के दो बेटे थे, उम्मेदसिंह और रघुवीर सिंह। एक बार दोनों राजकुमार जंगल में शिकार करने गए। रास्ते में एक विशाल नदी थी। दोनों राजकुमारों का मन हुआ कि क्यों ना नदी में नहाया जाये। यही सोचकर दोनों राजकुमार नदी में नहाने चल दिए। लेकिन नदी उनकी अपेक्षा से कहीं ज्यादा गहरी थी। रघुवीर सिंह तैरते तैरते थोड़ा दूर निकल गया, अभी थोड़ा तैरना शुरू ही किया था कि एक तेज लहर आई और रघुवीर सिंह को दूर तक अपने साथ ले गयी। रघुवीर सिंह डर से अपनी सुध बुध खो बैठा गहरे पानी में उससे तैरा नहीं जा रहा था अब वो डूबने लगा था। अपने भाई को बुरी तरह फंसा देख के उम्मेदसिंह जल्दी से नदी से बाहर निकला और एक लकड़ी का बड़ा लट्ठा लिया और अपने भाई रघुवीर सिंह की ओर उछाला। लेकिन दुर्भागयवश रघुवीर सिंह इतना दूर था कि लकड़ी का लट्ठा उसके हाथ में नहीं आ पा रहा था। इतने में सैनिक वहां पहुंचे और राजकुमार को देखकर सब यही बोलने लगे- अब ये नहीं बच पाएंगे, यहां से निकलना नामुनकिन है। यहां तक कि उम्मेदसिंह को भी ये अहसास हो चुका था कि अब रघुवीर सिंह नहीं बच सकता, तेज बहाव में बचना नामुनकिन है, यही सोचकर सबने हथियार डाल दिए और कोई बचाव को आगे नहीं आ रहा था। काफी समय बीत चुका था, रघुवीर सिंह अब दिखाई भी नही दे रहा था। अभी सभी लोग किनारे पर बैठ कर रघुवीर सिंह का शोक मना रहे थे कि दूर से एक सन्यासी आते हुए नजर आये उनके साथ एक नौजवान भी था। थोड़ा पास आये तो पता चला वो नौजवान रघुवीर सिंह ही था। अब तो सारे लोग खुश हो गए लेकिन हैरानी से वो सब लोग रघुवीर सिंह से पूछने लगे कि तुम तेज बहाव से बचे कैसे? सन्यासी ने कहा कि आपके इस सवाल का जवाब मैं देता हूं- ये बालक तेज बहाव से इसलिए बाहर निकल आया क्यूंकि इसे वहां कोई ये कहने वाला नहीं था कि यहां से निकलना नामुनकिन है इसे कोई हताश करने वाला नहीं था, इसे कोई हतोत्साहित करने वाला नहीं था। इसके सामने केवल एक लकड़ी का लट्ठा था और मन में बचने की एक उम्मीद और इसने प्रयत्न जारी रखा और बस इसीलिए ये बच निकला।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रह सकता है। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। कोर्ट व कचहरी के काम मनोनुकूल रहेंगे।

वृषभ व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। धैर्य रखें। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। पुराना रोग परेशानी का कारण रह सकता है।

मिथुन प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। बेवजह कहासुनी हो सकती है। कानूनी अड़चन दूर होगी।

कर्क कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शत्रु पस्त होंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल होंगे।

सिंह विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का मौका मिलेगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। दुष्टजनों से दूरी बनाए रखें। निवेश शुभ रहेगा।

कन्या लाभ के अवसर हाथ से निकलेंगे। बेवजह कहासुनी हो सकती है। पुराना रोग उभर सकता है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। व्यापार ठीक चलेगा।

तुला पराक्रम बढ़ेगा। लंब समय से रुके कार्य सहज रूप से पूर्ण होंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। शेयर मार्केट में सफलता मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बनी रहेगी।

धनु आंखों का ख्याल रखें। अज्ञात भय सताएगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। कानूनी अड़चन आ सकती है।

मकर व्यवसाय की गति धीमी रहेगी। आय में निश्चितता रहेगी। कोई बड़ी समस्या आ सकती है। धैर्य रखें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

कुम्भ व्यवसाय ठीक चलेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। शारीरिक कष्ट संभव है तथा तनाव रहेंगे। सुख के साधन प्राप्त होंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

मीन आराम तथा मनोरंजन के साधन उपलब्ध होंगे। यश बढ़ेगा। व्यापार वृद्धि होगी। नई योजना बनेगी जिसका तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। कार्यप्रणाली में सुधार होगा।

हिंदी फिल्म से कब आया आखिरी बार ऑफर मुझे याद नहीं : नेहा

नेहा धूपिया ने काम न मिलने पर बयां किया दर्द

बॉलीवुड | मसाला

नेहा धूपिया ने फिल्म इंडस्ट्री में अपने स्ट्रगल के बारे में खुलकर बात की है। नेहा ने बताया है कि 22 साल के लंबे करियर में उन्हें फिल्म इंडस्ट्री में जगह बनाने के लिए काफी संघर्ष किया है। एक्ट्रेस ने हाल ही में कहा कि उन्हें याद भी नहीं है कि आखिरी बार उन्हें हिंदी फिल्म का ऑफर कब मिला।

नेहा धूपिया ने ने हाल ही में खुलासा किया है कि उन्हें बॉलीवुड से ऑफर न मिल रहा हो लेकिन साउथ फिल्मों में उन्हें काम करने का मौका मिल रहा है। मीडिया हाउस से बातचीत के दौरान एक्ट्रेस ने बोला- मैं एक ऐसी जगह से आती हूं जहां मैंने 22 सालों से खुद को सिनेमा के दिलचस्प हिस्से से जोड़ने के लिए संघर्ष किया है। कभी-कभी मेरी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परफॉर्म करती है।

एक्ट्रेस ने इंटरव्यू में आगे कहा कि किसी न किसी तरह से कोई आता और बोलता है कि अरे ये तो बहुत बढ़िया था। हमें आपका काम पसंद आया है। अरे आप इसमें बहुत अच्छी थी, तो क्यों न साथ मिलकर कुछ करें।

इसलिए किसी न किसी तरह से अपने काम को लोगों के सामने रखना बहुत जरूरी होता है। कभी-कभी तो ये बढ़िया होता है, न ही दर्शकों को पसंद आता है तो वहां खुद को जांचने की जरूरत होती है। नेहा ने हिंदी फिल्मों के ऑफर पर बात करते हुए कहा- मुझे आखिरी बार हिंदी फिल्म का ऑफ कब मिला था, मुझे याद भी नहीं है मुझे नहीं पता कि मेरा फेन क्यों नहीं बजता, मुझे ये भी लगता है कि इंडस्ट्री सच में मुश्किल दौर से गुजर रही है।

इंडिया में धूम मचाने को उत्सुक करण

पंजाबी गायक करण औजला विक्की कौशल की रोमांटिक कॉमेडी फिल्म बैड न्यूज के अपने हालिया बॉलीवुड गाने तौबा तौबा की सफलता से काफी खुश हैं। यह गाना पूरे इंटरनेट पर ट्रेंड कर रहा है। करण औजला ने अपने पहले भारत दौरे की घोषणा करके अपने भारतीय प्रशंसकों के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है, जिसका नाम है इट वाज ऑल ए ड्रीम वर्ल्ड टूर। बता दें कि खबरों के मुताबिक उन्होंने इस दौरे के लिए दो मिलियन अमेरिकी डॉलर की चौंका देने वाली फीस तय की है।

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो यह टूर भारत में मनोरंजन इंडस्ट्री पर बड़ा प्रभाव डालने वाला है। यूके, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में उनके शो की टिकटें पहले ही बिक चुकी हैं, इसलिए भारत में होने वाला यह कॉन्सर्ट पंजाबी कलाकार द्वारा सबसे बड़े लाइव कार्यक्रमों में से एक होने की उम्मीद है, जिसमें 70,000 से ज्यादा लोग शामिल होंगे।

लाइव नेशन के सहयोग से टीम इनोवेशन द्वारा प्रस्तुत और निर्मित यह दौरा 7 दिसंबर, 2024 को चंडीगढ़ में शुरू होगा। यह 13 दिसंबर को बेंगलुरु, 15 दिसंबर को नई दिल्ली और 21 दिसंबर, 2024 को मुंबई में समाप्त होगा। खबरों की मानें तो सिंगर के शो की टिकटों ने अभी से आसमान छू लिया है। रिपोर्ट्स की मानें तो शो की एक टिकट की कीमत एक लाख रुपये तक पहुंच गई है। यही नहीं, खबर है कि शो के सभी टिकट बिक चुके हैं।

भारत का मेरे दिन में एक विशेष स्थान : औजला

टूर के लिए अपने उत्साह को साझा करते हुए, करण औजला ने एक आधिकारिक बयान में कहा, यह टूर मेरे करियर में काफी महत्वपूर्ण है, जो पंजाब के एक छोटे से गांव से वैश्विक मंच तक की मेरी यात्रा को मेरे फैंस तक पहुंचाएगी। भारत का मेरे दिल में एक विशेष स्थान है, और मैं इट वाज ऑल ए ड्रीम टूर को अपने घर लाने का इंतजार नहीं कर सकता। मैं इस सपने को संभव बनाने के लिए अपने प्रशंसकों का आभारी हूं। हम एक साथ जश्न मनाएंगे और नया इतिहास बनाएंगे।

बॉलीवुड | मन की बात

फिल्म 'किल' को अपनी शानदार सफलता मानते हैं राघव जुयाल

सोनी टीवी जगत का नामी चेहरा हैं। टीवी के अलावा राघव कई फिल्मों में भी अपना अभिनय प्रदर्शन दिखा चुके हैं। इन दिनों वह अपनी हालिया रिलीज फिल्म किल को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। फिल्म में उनका किरदार दर्शकों को काफी पसंद आया है। वह इन दिनों इसका आनंद उठा रहे हैं। राघव ने हाल ही में कहा, मैं इस समय का भरपूर आनंद ले रहा हूं। ऐसा लग रहा है कि मैं अभी अपने करियर में बदलाव देख रहा हूं। राघव जुयाल ने किल को कहा, पूरी इंडस्ट्री ने मुझे इसकी सराहना करने के लिए बुलाया है। उन्होंने कहा, अच्छा लग रहा है कि हमारी मेहनत का फल मिल रहा है। विदेशों से भी निर्माता और निर्देशक मुझे बुला रहे हैं। इस फिल्म से पहले वह सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान में नजर आए थे। अभिनेता ने हाल ही में किल को लेकर कहा, इस फिल्म ने मेरे लिए दरवाजे खोले। मुझे लगता है कि यह मेरी सफलता है। फिल्म रिलीज होने के बाद से यह एक शानदार सफर रहा है। अभिनेता ने आगे कहा, कल्कि जैसी 600-700 करोड़ रुपये के बजट वाली फिल्म, जिसमें इतने बड़े सितारे थे, वो हमारे साथ थे। हम एक छोटे बजट के साथ आए थे, लेकिन केवल मुंह से की गई चर्चा के कारण ही लोगों को सिनेमाघरों तक लाने में सक्षम थे। पहले मैंने केवल मुंह से की गई चर्चा के प्रभाव के बारे में सुना था, लेकिन अब मैंने इसका अनुभव किया है। उन्होंने कहा, लोग ऐसी चमक-दमक वाली फिल्में नहीं देखना चाहते, जिसमें हीरो अपनी प्रेमिका के साथ रोमांटिक होता है। उसे बचाता है और दिल जीतता है। दर्शक कहानी और वास्तविक ड्रामा की अपेक्षा करते हैं, सपनों की दुनिया की नहीं। किल में चर्चित एक्शन सीन के बारे में बात करते हुए राघव जुयाल ने कहा, हमने बहुत चोट खाई है। हमें नहाते समय चोट के निशानों का एहसास होता था। हमने एक्शन सीन के लिए नौ महीने की ट्रेनिंग ली है, यह एक अद्भुत और मजेदार अनुभव था। एक्शन भी एक मुक्का मारने वाला नहीं था। हमने सुपर वीएफएक्स के साथ रॉ एक्शन किया था।

शख्स ने आग लगाकर फूंक दिया अपना 10 करोड़ का बंगला, वजह है अजीबोगरीब

दुनिया में कई तरह के लोग हैं। कई लोगों को बहुत गुस्सा आता है तो कई लोग हर परिस्थिति में शांत रहते हैं। कई लोग चीजों को आराम से शांत दिमाग से सुलझाते हैं तो कई लोग छोटी-छोटी बातों में गुस्सा होकर अपना आपा खो देते हैं। लेकिन अक्सर लोग गुस्से में अपना ही नुकसान कर लेते हैं। बाद में जब उनका गुस्सा शांत होता है तो समझ आता है कि उन्होंने क्या कर दिया। ऐसा ही कुछ हाल ही में एक शख्स के साथ हुआ। दरअसल, एक शख्स ने खुद ही अपने करोड़ों के बंगले को आग लगाकर फूंक दिया। वजह जानकर आप भी हैरान रह जाएंगे। दरअसल, ब्रिटेन के रहने वाले एक करोड़पति और नामचीन शख्स ने अपने ही बनाए बंगले को आग के हवाले कर दिया। उस शख्स ने ऐसा क्यों किया, इसके पीछे की वजह जानकर आप भी दंग रह जाएंगे। रिपोर्ट के मुताबिक 50 साल के गोल्फर फ्रांसिस मैकगिर्क ने ये कांड किया है। फ्रांसिस मैकगिर्क एक नामचीन शख्स हैं और जाने-माने गोल्फर रह चुके हैं। मैकगिर्क करोड़पति हैं और केंट के सैंडविच में उनका एक आलीशान बंगला है, जो सीधा समंदर की ओर फेस करता है। हाल ही में 25 जून को उन्होंने अपने इस लग्ज़री बंगले में खुद आग लगा दी। इस दौरान उनका फैमिली डॉग अंदर ही था. वो तो गनीमत रही कि पड़ोसियों ने तुरंत ही फायरफाइटर्स को कॉल किया और कुत्ते की जान बच गई। बंगले को भी ज्यादा नुकसान नहीं हुआ।

फ्रांसिस ने बंगले को आग लगाने से पहले अपनी पत्नी को मैसेज किया था कि वो घर को फूंकने जा रहे हैं। दरअसल उनकी पत्नी सराह से उनका तलाक का केस चल रहा था। ऐसे में उन्हें इस प्रॉपर्टी का हक न मिले, इसलिए फ्रांसिस ने इसमें आग लगा दी। पहले उन्होंने खाने वाले तेल से इसे फूंकना चाहा लेकिन बाद में कुशन के ज़रिये पूरे घर में आग लगा दी। जब ये मामला कोर्ट में पहुंचा तो जज भी वजह जानकर दंग थे। हालांकि फ्रांसिस को जेल नहीं हुई और उन्हें वॉर्निंग देकर छोड़ दिया गया।

अजब-गजब | इस रेगिस्तान के अंदर बने हैं स्विमिंग पूल, होटल और चर्च

यहां जमीन के नीचे बसा है लग्जरी शहर

आमतौर पर लोग धरती पर मकान बनाते हैं। लेकिन क्या आपने धरती के नीचे बने घर देखें हैं। एक जगह ऐसी भी है, जहां लोग जमीन पर नहीं बल्कि जमीन के नीचे घर बनाकर रहते हैं। ये घर बहुत आलीशान हैं और इन घरों में आपको सुख सुविधाओं का सभी सामान मिलेगा। जब आप इन घरों में प्रवेश करेंगे तो आपकी जमीन के नीचे किसी आधुनिक शहर जैसा लगेगा। जिस तरह से आधुनिक शहरों में सुख सुविधाओं के सारे सामान होते हैं, वहीं सारे सामान आपको इन घरों में भी देखने को मिलेंगे। यह अनोखा शहर ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी इलाके में बसा है। इसे कूबर पेडी के नाम से जाना जाता है।

जब आप ऑस्ट्रेलिया की इस जगह पर पहुंचेंगे तो आपको यहां जमीन पर सिर्फ रेगिस्तान के बीच सिर्फ लाल और भूरी रंग की जमीन नजर आएगी। हालांकि, कुछ लोग यहां जमीन के ऊपर भी घर बनाकर रहते हैं, लेकिन यहां एक हिस्सा ऐसा भी है जहां जमीन के ऊपर कुछ नहीं दिखता और जमीन के नीचे लग्जरी लाइफ की सारी सुविधाएं मौजूद हैं। इसमें स्विमिंग पूल, होटल, चर्च समेत कई भव्य रेस्टोरेंट भी मौजूद हैं।

दरअसल, कूबर पेडी काफी गर्म जगह है, यहां सर्दियों के मौसम में भी गर्मी रहती है और बारिश भी ही होती है। रिपोर्ट के अनुसार, सालभर में यहां 130 मिली-मीटर के आस-पास बारिश होती है। ये एक बड़ा कारण है कि लोग जमीन के नीचे रहना पसंद करते हैं। यहां अगर 24 घंटे भी ठीक-ठाक बारिश हो जाए तो बाढ़ जैसे हालात बन जाते हैं। जमीन के नीचे बसे इस शहर में करीब 3500 लोग रहते है। इस शहर में लगभग 45 देशों के लोग बसे हुए हैं। इसमें भी 60 परसेंट लोग यूरोप के रहने वाले हैं। कम जनसंख्या के बावजूद ये शहर अपनी अद्भुत संस्कृति और रहन-सहन की वजह से लोगों के पसंदीदा जगहों में शुमार है। यहां कमाई का जरिया सैलानी और ओपल की खदान हैं। यहां के लोग रात में ही खेल-कूद का आनंद उठाते हैं। यहां का गोल्फ कोर्स काफी मशहूर है। इस शहर में सिर्फ अंडर-ग्राउंड घर ही नहीं बल्की होटल भी मौजूद हैं। यहां आपको जमीन के नीचे स्विमिंग पूल भी नजर आएगा।

जमीन के नीचे बसे इस शहर में करीब 3500 लोग रहते है। इस शहर में लगभग 45 देशों के लोग बसे हुए हैं। इसमें भी 60 परसेंट लोग यूरोप के रहने वाले हैं। कम जनसंख्या के बावजूद ये शहर अपनी अद्भुत संस्कृति और रहन-सहन की वजह से लोगों के पसंदीदा जगहों में शुमार है। यहां कमाई का जरिया सैलानी और ओपल की खदान हैं। यहां के लोग रात में ही खेल-कूद का आनंद उठाते हैं। यहां का गोल्फ कोर्स काफी मशहूर है। इस शहर में सिर्फ अंडर-ग्राउंड घर ही नहीं बल्की होटल भी मौजूद हैं। यहां आपको जमीन के नीचे स्विमिंग पूल भी नजर आएगा।

लड़खड़ाती सरकार का लड़खड़ाता बजट : कपिल सिब्बल

बिहार और आंध्र प्रदेश को सौगातें देने पर कसा तंज

बिना बैसाखियों के सरकार नहीं रह सकती

» बोले- जेडीयू-टीडीपी की बैसाखी पर खड़ी है केंद्र सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्र की नई-नवेली एनडीए सरकार द्वारा मंगलावर को केंद्रीय बजट पेश कर दिया गया। लेकिन इस बजट से जैसी उम्मीदें थीं वैसा कुछ भी नहीं मिला। सिर्फ बिहार और आंध्र प्रदेश के लिए सौगातों की बौछार की गई। वो भी इसलिए क्योंकि यहां सत्ता में बैठी जेडीयू और टीडीपी केंद्र में भाजपा के साथी हैं और इनकी ही मदद से नरेंद्र मोदी तीसरी बार सत्ता का सुख भोग रहे हैं। ऐसे में इन दोनों राज्यों को सौगात दी गई है। लेकिन अन्य कुछ खास नहीं रहा।

यही कारण है कि विपक्ष इस बजट को लेकर सरकार पर हमलावर है। अब राज्यसभा सांसद और देश के वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने भी इस बजट को लेकर केंद्र की एनडीए सरकार पर निशाना साधा है। कपिल सिब्बल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि जनता दल (यूनाइटेड) और तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) की बैसाखी पर खड़ी सरकार दोनों राज्यों को फायदा पहुंचाने के लिए मजबूर है। उन्होंने कहा कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए केंद्रीय बजट की कहानी यह है कि यह लड़खड़ाती सरकार का लड़खड़ाता बजट है।

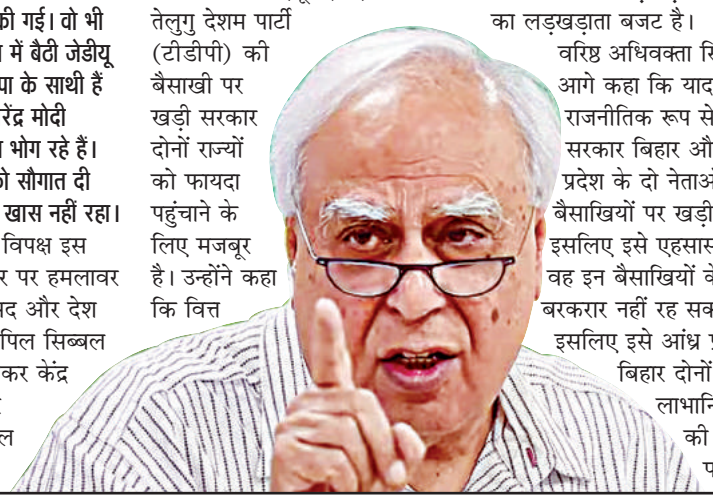

वरिष्ठ अधिवक्ता सिब्बल ने आगे कहा कि याद रखें कि राजनीतिक रूप से यह सरकार बिहार और आंध्र प्रदेश के दो नेताओं की बैसाखियों पर खड़ी है। इसलिए इसे एहसास है कि वह इन बैसाखियों के बिना बरकरार नहीं रह सकती। इसलिए इसे आंध्र प्रदेश और बिहार दोनों को लाभान्वित करने की जरूरत पड़ी। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार डगमगा रही है और टीडीपी के एन. चंद्रबाबू नायडू और जनता दल (यूनाइटेड) के नीतीश कुमार उसकी मदद कर रहे हैं, इसलिए बजट का लाभ दोनों राज्यों को मिला है।

जहां बीजेपी हारी उन राज्यों को कुछ नहीं दिया

राज्यसभा सांसद ने कहा कि हम इसके खिलाफ नहीं हैं क्योंकि हमारा मानना है कि मदद करने वालों को सहायता दी जानी चाहिए। सिब्बल ने यह भी दावा किया कि बीजेपी ने बजट में, उन राज्यों को दंडित किया है जहां उसने लोकसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था। उन्होंने कहा कि जहां-जहां उन्हें हार मिली है, वहां को लेकर उनमें नाराजगी है। उन्होंने यूपी को कुछ नहीं दिया। महाराष्ट्र, झारखंड और हरियाणा जैसे राज्यों में जहां चुनाव होने वाले हैं, उनको भी कुछ नहीं मिला है। क्या इन राज्यों से कोई दुश्मनी है?

अब अच्छे दिन की बात नहीं करती भाजपा

कपिल सिब्बल ने कहा पहली बार बजट भाषण राज्यों के साथ शुरू हुआ जैसे कि यह एक राजनीतिक खेल का मैदान हो। उन्होंने कहा कि 10 साल बीत चुके हैं और अब वे अच्छे दिन की बात नहीं करते हैं। वे निजी निवेश के लिए कुछ नहीं कर सके क्योंकि आर्थिक स्थिति दिनोदिन खराब होती जा रही है। उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि वे नौकरियां पैदा नहीं कर सके और कांग्रेस ने जिस अप्रेंटिसशिप योजना की बात की थी, उसे लाया गया है।

मनोज जरांगे ने दिया शिंदे सरकार को अल्टीमेटम

» बोले- 13 अगस्त तक हमारी मांगों को पूरा करे सरकार

» महायुति सरकार गिराने का किया दावा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मराठा आरक्षण की मांग कर रहे मनोज जरांगे ने शिंदे सरकार की मुश्किलें और बढ़ा दी है। जरांगे ने अब सरकार को नया अल्टीमेटम दिया है। उन्होंने अनशन स्थगित करने की घोषणा की है। इस बीच उन्होंने राज्य सरकार को 13 अगस्त तक समय दिया है। उन्होंने कहा, रात को मैंने सलाइन लगाई है। सलाइन लगाकर अनशन करने का कोई मतलब नहीं है। सरकार 13 अगस्त तक हमारी मांगों को पूरा करे। सरकार के पास 13 तारीख तक का समय है।

मनोज जरांगे ने कहा कि देवेंद्र फडणवीस सरकार गिरेगी। बीजेपी का एक भी विधायक नहीं आएगा। 28 अगस्त को तय किया जाएगा कि राज्य के 288 उम्मीदवारों को हराना है की जिताना है।

शिंदे पर साधा निशाना

मनोज जरांगे ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर निशाना साधते हुए कहा कि वह नौकरियों और शैक्षिक संस्थानों में मराठा समुदाय को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के तहत आरक्षण देने की प्रक्रिया में विलंब कर रहे हैं। जरांगे की मांगों में कुनबी समुदाय को मराठा समुदाय के सदस्यों से खून का रिश्ता रखने वाले के रूप में मान्यता देने वाली मसौदा अधिसूचना को लागू करना और मराठाओं को ओबीसी श्रेणी के तहत आरक्षण देना शामिल है। कुनबी, एक कृषक समुदाय है। इसे महाराष्ट्र में ओबीसी का दर्जा प्राप्त है। जरांगे मांग कर रहे हैं कि सभी मराठाओं को कुनबी प्रमाण पत्र जारी किया जाए ताकि वे सरकारी नौकरियों और शिक्षा में कोटा के लिए पात्र हो सकें।

सीएम शिंदे जानबूझकर कर रहे देरी

जरांगे ने कहा कि मुख्यमंत्री शिंदे मराठा समुदाय को आरक्षण दे सकते हैं, लेकिन वह (प्रक्रिया में) देरी कर रहे हैं। केवल शिंदे साहब ही आरक्षण दे सकते हैं, लेकिन वह इसमें देरी क्यों कर रहे हैं? जरांगे ने कहा कि सरकार को मराठों को उनकी मांगें पूरी होने तक तीन आरक्षण विकल्प प्रदान करने चाहिए- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस), सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ा वर्ग (एसईबीसी) के तहत 10 प्रतिशत और ओबीसी कोटा (27 प्रतिशत) कुनबी के रूप में।

मुठभेड़ में सेना ने एक आतंकी को उतारा मौत के घाट

» कुपवाड़ा में हुई भिड़ंत में एक जवान भी हुआ शहीद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कुपवाड़ा। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में मुठभेड़ के दौरान घायल हुए एक जवान की मौत हो गई है। भारतीय सेना के अनुसार, रात भर चली मुठभेड़ में एक आतंकवादी भी मारा गया। कुपवाड़ा जिले के लोलाब इलाके में सुरक्षा बलों द्वारा आतंकवाद विरोधी अभियान चलाया गया।

भारतीय सेना की चिनार कोर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि कुपवाड़ा के कोवुत इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशेष इनपुट के आधार पर, भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा 23 जुलाई से 24 जुलाई तक एक संयुक्त तलाशी अभियान चलाया गया। 24 जुलाई को, संदिग्ध गतिविधि देखी गई और सतर्क सैनिकों द्वारा चुनौती दी गई, जिसके जवाब में आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। आगामी गोलीबारी में एक आतंकवादी मारा गया और एक एनसीओ घायल हो गया। ऑपरेशन जारी है।

पीएम मोदी करेंगे सीएम योगी से मुलाकात

» 27 जुलाई को दिल्ली में हो सकती है यूपी के मामले पर बैठक

» दोनों उपमुख्यमंत्री समेत प्रदेश के कई नेता रहेंगे मौजूद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी भाजपा में आंतरिक विवादों को सुलझाने के लिए पार्टी का शीर्ष नेतृत्व सक्रिय हो गया है। जानकारी के मुताबिक, 27 जुलाई को दिल्ली में नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक के बाद यूपी के मुद्दे पर एक विशेष बैठक का आयोजन किया जा सकता है। इस बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ केंद्रीय मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और अन्य वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों उप मुख्यमंत्री, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और प्रदेश महामंत्री संगठन भी इस बैठक में मौजूद रहेंगे।

नीति आयोग की बैठक के बाद मुख्यमंत्री योगी की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की संभावना है। इसके अलावा, मुख्यमंत्री भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह से भी मिल सकते हैं। बैठक में यूपी के भाजपा नेताओं के बीच बयानबाजी से उत्पन्न तनाव, लोकसभा चुनाव में हार की समीक्षा और भविष्य की रणनीति पर चर्चा की जाएगी। साथ ही, विधानसभा की दस सीटों पर होने वाले उपचुनाव पर भी विचार विमर्श किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार, 25-26 जुलाई को दिल्ली में भाजपा ने प्रदेश संगठन मंत्रियों की बैठक भी बुलाई है जिसमें यूपी के मुद्दे पर विशेष चर्चा की जाएगी।

शेफाली के तूफान में उड़ी नेपाल, इंडिया सेमीफाइनल में

» एशिया कप में लगातार तीन मैच जीतकर नॉक आउट में पहुंचा भारत

» नेपाल को 82 रनों से दी करारी शिकस्त

» इंडिया ने खड़ा किया था 178 रन का स्कोर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दांबुला। श्रीलंकात की सरजमी पर खेले जा रहे महिला एशिया कप टूर्नामेंट भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सेमीफाइनल में जगह बना ली है। कप्तान हरमनप्रीत कौर के नेतृत्व में भारतीय महिला क्रिकेट टीम इन दिनों जबरदस्त फॉर्म में हैं। टीम ने ग्रुप स्टेज के अपने लगातार 3 मुकाबले जीतकर सेमीफाइनल में एंट्री की है।

भारतीय टीम ने ग्रुप-ए में अपना तीसरा मैच नेपाल के खिलाफ खेला। श्रीलंका के दांबुला में खेले गए इस मुकाबले में भारतीय टीम ने नेपाल को 82 रनों से करारी शिकस्त देकर मुकाबले को अपने नाम किया। मैच में भारतीय ओपनर शेफाली वर्मा ने बल्लेबाजी से धूम मचा दी। उन्होंने 48 गेंदों पर 81 रनों की मैच विनिंग पारी खेली। इस शानदार पारी के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए भारतीय टीम ने 3 विकेट पर 178 रन बनाए। टीम के लिए शेफाली ने 81 रनों की पारी में 1 छक्का और 12 चौके जमाए। उनके अलावा डी हेमलता ने 47 और जेमिमाह रोड्रिग्ज ने नाबाद 28 रन बनाए। नेपाल के लिए सीता राणा ने 2 विकेट झटके।

अपने ग्रुप में टॉप पर रही टीम इंडिया

भारतीय टीम ने ग्रुप-ए में अपने तीनों मैच जीते और पॉइंट्स टेबल में सबसे ऊपर रही। टॉप पर रहते हुए ही भारतीय टीम ने सेमीफाइनल में एंट्री की है। उसके साथ ही इस ग्रुप से पाकिस्तान ने सेमीफाइनल का टिकट कटाया है। अभी ग्रुप-बी से दो सेमीफाइनलिस्ट तय नहीं है।

96 रन ही बना सकी नेपाल

179 रनों के टारगेट का पीछा करते हुए नेपाल की टीम 9 विकेट पर 96 रन ही बना सकी और मुकाबला गंवा दिया। टीम के लिए कोई भी प्लेयर 20 रनों का आंकड़ा नहीं छू सका। सबसे ज्यादा 18 रन ओपनर सीता राणा ने ही बनाए हैं। जबकि भारत के लिए दीप्ति शर्मा ने 3 विकेट झटके। अरुंधति रेड्डी और राधा यादव को 2-2 विकेट मिले।

विधानसभा में विपक्ष ने नीतीश सरकार को घेरा

» विपक्षी नेताओं ने हाथ में बैनर-पोस्टर लेकर किया विरोध व नारेबाजी

» विपक्षी महिला विधायक पर भड़के सीएम नीतीश कुमार

» राजद ने लगाए सरकार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार विधानसभा में चल रहा मानसून सत्र लगातार हंगामेदार बना हुआ है। विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच लगातार जोरदार बहस और हंगामा देखने को मिल रहा है। विपक्ष घोटालों का आरोप लगाकर प्रदेश की नीतीश सरकार को घेर रहा है। आज भी जैसे ही तीसरे दिन की कार्यवाही शुरू हुई विपक्षी नेता वेल में आ गए और बैनर पोस्टर लेकर प्रदर्शन करने लगे। विपक्ष नीतीश हाय-हाय के नारे लगाने लगा। विपक्ष आरक्षण के मुद्दे पर हंगामा कर रहा है। इस बीच सीएम नीतीश कुमार को भी काफी आक्रामक रूप में देखा गया है और उन्होंने विपक्षी नेताओं को जमकर सुनाया। हालांकि, विपक्ष ने अपना विरोध लगातार जारी रखा।

दरअसल, महागठबंधन विधायकों ने 65 प्रतिशत आरक्षण को संविधान के नौवीं सूची में शामिल करने की मांग की। तभी सीएम नीतीश कुमार सदन में खड़े होकर बोलने लगे। उन्होंने कहा कि मेरी इच्छा थी तब ही सबको बुलाकर सर्वे कराया जाए। आप लोग ऐसे ही बोलते रहते हैं। हमने लगकर ये पूरा काम कराया था।

महिला विधायक से बोले नीतीश कहा- कुछ जानती भी हो

इस बीच विपक्ष की एक महिला सदस्य पर सीएम नीतीश गुस्सा गए। सीएम नीतीश ने महिला सदस्य से कहा कि कुछ जानती हो जो बोल रही हो, कहां से आई हो। महिला हो समझती नहीं हो। विपक्ष के अन्य विधायकों को भी सीएम ने कहा आप लोग चुपचाप बैठ जाइए। दरअसल, ये महिला जोर-जोर से नीतीश कुमार को बीच में टोक रही थीं। तभी सीएम को गुस्सा आ गया। इसके बाद महागठबंधन के भारी हंगामे के कारण विधानसभा की कार्यवाही को बीच में स्थगित भी किया गया।

विपक्ष सिर्फ अपनी सियासत चमका रहा : विजय

वहीं जेडीयू मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि बिहार सरकार ने जातीय गणना खुद से कराई। आरक्षण का दायरा बढ़ा। 50 पर्सेंट से 65 फीसदी किया गया। उसी समय हम लोगों ने केंद्र सरकार से कहा था कि इसको संविधान की नौवीं अनुसूची में डाल दीजिए लेकिन पटना हाईकोर्ट ने 65 पर्सेंट आरक्षण पर रोक लगा दी है। हम लोग सुप्रीम कोर्ट भी गए हैं ताकि रोक हट जाए, लेकिन विपक्ष बेवजह हंगामा कर रहा है। सिर्फ अपनी सियासत चमका रहा है।

विपक्ष ने टैबलेट घोटाले के लगाए आरोप

इससे पहले विधानसभा के बाहर भी विपक्षी दलों के नेताओं ने हाथ में बैनर और तती लेकर सरकार के विरोध में नारेबाजी की। वहीं आरजेडी विधायक मुकेश रोशन ने दस्तावेज दिखाकर सरकार पर घोटाले का आरोप लगाते हुए कहा कि जीईएम पोर्टल पर डाला गया है कि बिहार शिक्षा परियोजना के तहत सवा लाख टैबलेट खरीदना है। यह टैबलेट मेक इन इंडिया के तहत 10,000 में मिलता है, लेकिन विदेश की कपनियों सैमसंग इत्यादि से यह मंगाया जा रहा है। सवा लाख टैबलेट खरीदने के लिए सारे नियम कानून को तोड़े जा रहे हैं। मुकेश रोशन ने कहा कि शिक्षा विभाग के अपर मुय सचिव एस सिद्धार्थ ने सभी नियम कानून को ताक पर रखकर, निविदा शर्तों में छेड़-छाड़ करके यह काम बाहरी कपनी को दिया गया है। कांग्रेस विधायक राजेश राम के नेतृत्व में कांग्रेस विधायकों ने हाथ में झाल लेकर प्रदर्शन किया। उनकी मांग है कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिले। बजट बिहार विरोधी है। बिहार को कुछ नहीं मिला।

शंभू बॉर्डर पर हरियाणा और पंजाब को 'सुप्रीम' फटकार

» कोर्ट बोला- 1 हफ्ते के अंदर किसानों से करें बात

» बात करने के लिए निष्पक्ष लोगों का करें चयन

» अदालत ने कहा- हाईवे हमेशा बंद नहीं रख सकते

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। शंभू बॉर्डर खुलेगा या नहीं इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में आज सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने पंजाब और हरियाणा सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि किसानों से बात करना जरूरी है और 1 सप्ताह के अंदर ऐसे निष्पक्ष लोगों के नाम तय करें जो किसानों से बात करेंगे। तब तक दोनों राज्य अभी जो स्थिति है, बनाए रखें।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसानों से बात करना जरूरी। सरकार कुछ निष्पक्ष लोगों के जरिए उनकी बात सुने। हमने निष्पक्ष लोगों के जरिए किसानों से बात करने के लिए कहा है। 1 सप्ताह में हरियाणा और पंजाब सरकार वार्ताकारों के नाम हमें सुझाए। दोनों राज्य चरणबद्ध तरीके से बॉर्डर खोलने पर बात करें ताकि आम लोगों की समस्या दूर हो सके। अगर वार्ताकारों के नाम राज्य सरकारें तय न कर सकें, तो हम तय करेंगे।

हरियाणा-पंजाब ने एक दूसरे पर बोला हमला

इससे पहले सुनवाई के दौरान हरियाणा के लिए पेश सॉलिसीटर जनरल ने कहा कि जो सो रहा है, उसे जगा सकते हैं लेकिन जो जागते हुए भी खुद को सोया हुआ दिखाए, उसे कैसे जगा सकते हैं। इस पर कोर्ट ने कहा कि हाईवे हमेशा बंद नहीं रह सकता। तो सॉलिसीटर ने कहा कि वह जेसीबी और ट्रैक्टर ट्रॉली लेकर आना चाहते हैं, या हाईवे पर इनकी जगह है। वहीं, पंजाब के वकील ने कहा कि हरियाणा ने बॉर्डर बंद किया है तो इसके जवाब में सॉलिसीटर ने कहा कि पंजाब आंदोलनकारियों को हटाए। हम बॉर्डर खोल देंगे। दोनों की बात पर कोर्ट ने कहा कि हम पंजाब और हरियाणा का झगड़ा सुनने नहीं बैठे हैं।

मिडिल क्लास का गला रेतकर चल रही सरकार : श्रीनेत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत बीजेपी पर हमला बोलने का कोई मौका नहीं छोड़ती हैं। अब एक बार फिर केंद्र सरकार को निशाने पर लेते सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि ये कुर्सी बचाओ बजट है। हालांकि, हमें खुशी है कि बिहार और आंध्र प्रदेश को इस बजट में बहुत कुछ दिया गया। लेकिन हमें उम्मीद है कि अब बिहार में पुल नहीं गिरेंगे। सुप्रिया श्रीनेत ने कहा, नकल के लिए भी अकल की जरूरत है।

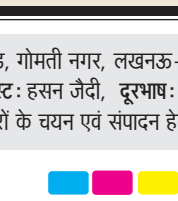

कांग्रेस प्रवक्ता ने आगे कहा कि इनके भक्तगण ही इनकी कुर्सी हिला रहे हैं। मिडिल क्लास आपके साथ था। लेकिन अब बजट के बाद उसने आपसे नाता तोड़ दिया है। मिडिल क्लास के लोग लिख रहे हैं कि बीजेपी को वोट देकर गलती कर दी। आप मिडिल क्लास की कमर क्यों तोड़ रहे हैं। श्रीनेत ने सरकार पर तल्ख होते हुए कहा कि महंगाई कंट्रोल नहीं हो रही, ये मिडिल क्लास का गला रेतकर सरकार चला रहे।

एएमयू में मामूली विवाद पर चली गोली, दो घायल

» रजिस्ट्रार कार्यालय में तैनात दो कर्मचारियों को लगी गोली, पुलिस कर रही मामले की छानबीन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश में ऐसा लगता है कि कानून व्यवस्था बिल्कुल ताक पर रख दी गई है। प्रदेश में गोली चलाना, हत्या करना जैसे आम बात हो गई है। आए दिन प्रदेश में तरह-तरह की गंभीर घटनाओं को अंजाम दिया जाता रहता है। इस बीच अब राज्य के अलीगढ़ जिले में फायरिंग की घटना से दहशत फैल गई। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की मेडिकल कॉलोनी में मामूली विवाद के बाद रजिस्ट्रार कार्यालय में तैनात कर्मचारियों पर फायरिंग का मामला सामने आया है।

फायरिंग में गोली लगने से दोनों कर्मचारी घायल हो गए हैं। घायल कर्मचारियों को इलाज के लिए जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। पुलिस अधिकारी फोर्स के साथ मेडिकल कॉलेज में मौजूद हैं। साथ ही घटना की जानकारी में जुटे हैं।

दोनों सगे भाइयों को लगी गोली

अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार, अलीगढ़ के थाना सिविल लाइन इलाके में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की मेडिकल कॉलोनी में एएमयू रजिस्ट्रार कार्यालय में तैनात दो सगे भाइयों को गोली मार दी गई। गोली लगने से दोनों भाई घायल हो गए हैं। घायलों को उपचार के लिए जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मौके से दो आरोपियों को हिरासत में लिया है।

सुबह साढ़े नौ बजे हुई फायरिंग

अलीगढ़ मुस्लिम विवि के प्रॉक्टर डॉ. वसीम अली ने बताया कि एएमयू की मेडिकल कॉलोनी में रहने वाले मोहमद नदीम, मोहमद करीम रजिस्ट्रार कार्यालय में तैनात हैं। बुधवार सुबह 9.30 बजे मेडिकल कॉलोनी में दोनों सगे भाइयों पर हमलावरों ने फायरिंग कर दी। गोली लगने पर दोनों सगे भाई घायल हो गए। एएमयू की सुरक्षा व्यवस्था में तैनात मोबाइलिंग टीम मौके पर पहुंच गई और दोनों घायल भाइयों को उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया।

काठमांडू में विमान क्रैश,18 की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

काठमांडू। भारत के पड़ोसी राष्ट्र नेपाल से एक दर्दनाक हादसे की खबर सामने आई है। नेपाल की राजधानी काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बुधवार सुबह उड़ान भरने के दौरान एक निजी एयरलाइन कंपनी का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस विमान में 19 लोग सवार थे। इनमें 18 लोगों की मौत की की खबर सामने आ चुकी है। हादसे के बाद नेपाल के प्रधानमंत्री केपी ओली भी घटनास्थल पर पहुंचे।

» टेक ऑफ के समय रनवे से प्लेन के फिसलने के कारण हुआ हादसा

» काठमांडू के त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर हुई घटना

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, विमान पोखरा जा रहा था और सुबह करीब 11 बजे दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हवाई अड्डे पर तैनात एक सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि विमान के पायलट को अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने बताया कि विमान में लगी आग को बुझा दिया गया है। पुलिस और दमकलकर्मी दुर्घटनास्थल पर बचाव अभियान चला रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, हादसा हवाई जवाज के टेक ऑफ के दौरान रनवे से फिसल जाने के कारण हुआ है।

एहतियातन बंद किया गया त्रिभुवन एयरपोर्ट

पोखरा जाने वाले विमान के उड़ान भरने के दौरान रनवे से बाहर निकल जाने के कारण यह दुर्घटना हुई। विमान में चालक दल के सदस्यों सहित 19 लोग सवार थे। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, दुर्घटनास्थल से 18 शव बरामद किए गए। जहाज के कैप्टन एमआर शाय को अस्पताल ले जाया गया है। हवाई अड्डे पर धुएं का घना गुबार देखा गया। पुलिस और दमकलकर्मी दुर्घटना स्थल पर बचाव अभियान चला रहे हैं। हादसे के बाद काठमांडू के त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट को एहतियातन बंद कर दिया गया है।

19 लोग सवार थे विमान में

उड़ानों को किया गया डायवर्ट

प्लेन हादसे की कुछ तस्वीरें सामने आई हैं, जिसमें नजर आ रहा है कि विमान से आग की ऊंची-ऊंची लपटें उठ रही हैं। हादसे की वजह से त्रिभुवन एयरपोर्ट पर विमानों की आवाजाही प्रभावित हुई है। इस हादसे के बाद एहतियात बरतते हुए त्रिभुवन एयरपोर्ट पर लैंड होने वाले विमानों की लैंडिंग को लखनऊ और कोलकाता की तरफ डाइवर्ट कर दिया गया है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज़ नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।